10

भूगोल-शिक्षक की योग्यता

अध्यापन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए शिक्षक में कुछ गुण आवश्यक हैं। भूगोल-शिक्षक में वे सभी गुण होने आवश्यक हैं, परन्तु भूगोल विषय की विशेषता के अनुसार शिक्षक में कुछ विशेषताओं का होना अति आवश्यक है। इन विशेषताओं पर ध्यान दिये बिना भूगोल-शिक्षण का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण नहीं हो सकता है।

आधुनिक समय में यह अनुभव किया जाने लगा है कि भूगोल एक महत्त्वपूर्ण विषय है। निम्न कक्षाओं से उच्च कक्षाओं तक इसके शिक्षण की व्यवस्था की गयी है। विनाशकारी महायुद्धों ने भूगोल-शिक्षक के महत्त्व को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि भूगोल-शिक्षक के उचित ढंग से विषय पढ़ाने पर संसार में शान्ति तथा सद्भावना की स्थापना निर्भर है। पिछले चालीस वर्ष पूर्व की अपेक्षा अब इस विषय के शिक्षक का उत्तरदायित्व कहीं अधिक बढ़ गया है। इस उत्तरदायित्व के बढ़ने के साथ शिक्षक के विशिष्ट गुणों में भी वृद्धि होनी चाहिए, जिससे वह अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित कर सके और बढ़े हुए उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सके।

(1) भूगोल के विषय तथा पाठ्य-वस्तु का पूर्ण एवं आधुनिक ज्ञान होना चाहिए

भूगोल-अध्यापक को निरन्तर अध्ययनशील बने रहना चाहिए। इस गहन विषय का अध्ययन करते समय उसे स्वयं को, इस विस्तृत ज्ञान-सागर में डुबकी लगाने वाला केवल एक छात्र समझना चाहिए। समय के परिवर्तन के अनुसार सभी सामाजिक विज्ञानों की विषय-सामग्री में विकास तथा परिवर्तन होता रहता है। भूगोल महत्त्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान तथा गतिशील विषय है, इसलिए शिक्षक को इन परिवर्तनों तथा विकासों के विषय में आधुनिकतम ज्ञान होना चाहिए। यह तभी सम्भव है, जबकि अध्यापक भूगोल में क्षण-क्षण पर होने वाले परिवर्तनों के प्रति जागरूक रहे। भौगोलिक पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा भूगोल क्षेत्र में नवीन-से-नवीन भौगोलिक साहित्य का अध्ययन कर अपने विषय के ज्ञान को सदैव नया, सही तथा आधुनिकतम बनाये रखे। प्रचलित पुस्तकों के अतिरिक्त उस विषय से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों का अवलोकन करते रहना चाहिए। शिक्षक को विषय क्षेत्र में होने वाले आधुनिकतम परिवर्तनों तथा विकासों की पूर्ण जानकारी रखनी चाहिए। शिक्षक को स्थानीय भूगोल का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उदाहरणार्थ, स्थानीय प्रदेश के तापमान, वर्षा की माप, ठीक स्थिति तथा अन्य भौगोलिक बातों का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। यदि शिक्षक स्थानीय या गृह-प्रदेश के भूगोल में खूब रुचि लेता है तो छात्र भी उसमें रुचि लेकर

प्रकार अध्ययन करेंगे। भूगोल-शिक्षक को स्थानीय भूगोल को पर्याप्त महत्त्व देना चाहिए, क्योंकि भूगोल का वास्तविक अध्ययन गृह-प्रदेश से ही आरम्भ होता है।

(2) आधुनिक भूगोल-शिक्षण-पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान

प्राचीन भूगोल-शिक्षण-विधि अमनोवैज्ञानिक, दोषपूर्ण तथा अरुचिकर रही है। आजकल के शिक्षक को ऐसी शिक्षण-विधि उपयोग में लानी चाहिए जो बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप तथा अनुकूल हो। बच्चों की अवस्था तथा प्रवृत्ति के अनुरूप ही उसे शिक्षण-पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उदाहरणार्थ, प्रारम्भिक अवस्था में निरीक्षणात्मक तथा वर्णनात्मक पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसे इन विभिन्नताओं का पूर्ण ज्ञान हो और अपने तथा बच्चों की सुविधा के लिए उनका अनुसरण कर सके।

(3) बाल-मनोविज्ञान का ज्ञान

भूगोल-शिक्षक के लिए इसलिए आवश्यक है कि भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का जोर रहता है, उसको सन्तुष्ट करना बच्चे के लिए अति आवश्यक है। किशोरावस्था में छात्रों की घूमने की प्रवृत्ति को भौगोलिक पर्यटनों में प्रयोग किया जा सकता है। छात्रों की इकट्ठे करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति का, भौगोलिक चित्रों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्रित करने में सदुपयोग किया जा सकता है। किस अवस्था के छात्र को कैसी शिक्षा दी जाय, ताकि वह सरलता से सीख ले और उसमें आगे बढ़ने का उत्साह उत्पन्न हो। इस प्रकार का ज्ञान शिक्षक के लिए अति आवश्यक है।

(4) पाठ्यक्रम के अन्य विषयों तथा विकास आदि का ज्ञान

भूगोल वैज्ञानिक तथा मानवीय दोनों ही विषय से सम्बन्ध रखता है। इसलिए भूगोल-शिक्षक को दोनों ही प्रकार के विषयों में रुचि तथा उनका ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक को प्राकृतिक भूगोल को स्वयं समझने और छात्रों को समझने के लिए विज्ञान के साधारण सिद्धान्तों का ज्ञान अति आवश्यक है। हाईस्कूल स्तर के विज्ञान का ज्ञान यदि अध्यापक को हो तो उसे अधिक सफलता मिलती है। विज्ञान के ज्ञान की सहायता से भूगोल-शिक्षक का कार्य सुगम और सजीव हो जाता है। वैज्ञानिक यन्त्रों; जैसे—थर्मामीटर, रेगनेज, बैरोमीटर आदि का उपयोग भी अध्यापक आत्मविश्वास के साथ कर सकता है।

अन्य विषयों के ज्ञान की सहायता से भूगोल के पाठ्यक्रम से भिन्न-भिन्न विषयों से पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता हैं। भूगोल का अध्यापक जब अपने विषय का सह-सम्बन्ध भाषा, इतिहास, गणित, विज्ञान, कला तथा बागवानी से स्थापित करता है तो विषय सजीव और रोचक हो जाता है। भूगोल पढ़ाते समय अन्य विषयों से उदाहरण लेकर कथन की पुष्टि की जा सकती है। यदि विद्यार्थी विज्ञान में संवाहन के विषय में पहले पढ़ चुके हैं तो समुद्री धाराओं के विषय में पढ़ाना उन्हें सरल हो जाता है।

(5) पाठ्यक्रम को ऋतुओं के अनुसार रखना

पाठ में वास्तविकता लाने के लिए वास्तविक वस्तु के द्वारा पढ़ाने से बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। एक तो उनका मनोविनोद होता है और दूसरे, सामाजिक दृश्यों द्वारा किसी वस्तु की विशेषता ध्यान में अच्छी तरह जम जाती है। उदाहरणार्थ, छात्रों को रबी की फसल के विषय में पढ़ाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उस समय खेतों में गेहूँ, मटर, जौ इत्यादि खड़े हों जिससे छात्र निरीक्षण द्वारा वास्तविकता का अध्ययन कर सकें। इसी प्रकार खरीफ की फसल के विषय में जुलाई, अगस्त, सितम्बर के माह में ही पढ़ाना चाहिए; जैसे—

नदी, टापू और समुद्र के विषय में ज्ञान देना है तो वर्षा का मौसम अच्छा होता है। शीतकाल के दिनों में पाला, कुहरे आदि का ज्ञान हम अच्छी तरह विद्यार्थियों को दे सकते हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह निर्धारित पाठ्यक्रम को अपनी सुविधानुसार ऋतु के हिसाब से निश्चित कर ले जिससे भविष्य में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

(6) भूगोल-शिक्षक की निरीक्षण शक्ति तीव्र होनी चाहिए

तभी वह छात्रों का पथ-प्रदर्शन क्षमतापूर्वक कर सकता है। प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक वातावरण में निरन्तर होने वाली विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ खोज निकालना तथा उनमें अन्तर्निहित क्रियाओं के विषय में गूढ़ रहस्यों को जानना तीव्र निरीक्षण-शक्ति द्वारा ही सम्भव है। **शिक्षक भौगोलिक वातावरण का प्रभाव मानव-जीवन पर स्पष्ट रूप से अध्ययन करके ही छात्रों को उसके प्रभाव को भली-भाँति समझा सकता है।** शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह इधर-उधर घूमते समय प्राकृतिक वातावरण का पूर्ण तथा वास्तविक ज्ञान तथा उसका प्रभाव सही नोट करने के लिए अध्यापक को सूक्ष्म निरीक्षण करना होगा। भौगोलिक निरीक्षण के लिए पास-पड़ोस के स्थानों, हरे-भरे धान के खेतों तथा चाय के बगीचे दिखाने जब वह ले जाय, तब उसकी दृष्टि सूक्ष्म रूप से सभी बातों को देखे और शीघ्र-से-शीघ्र समझ ले कि कौन-सी वस्तुएँ विद्यार्थियों के दिखाने योग्य हैं और किस क्रम के अनुसार वस्तुओं को दिखाना चाहिए। ठण्डे देश के निवासी तथा रेगिस्तान के गर्म देश के निवासी अपने वातावरण के अनुरूप अपने जीवन के रहन-सहन को बनाते हैं। इसका अध्ययन अध्यापक को सूक्ष्म रूप से करना होगा, क्योंकि वह बच्चों को बिना पूर्ण ज्ञान के सन्तुष्ट नहीं कर सकता। इसके लिए निरीक्षण-शक्ति उसे सफलता प्रदान करती है।

(7) भूगोल-शिक्षक में नेतृत्व के गुण तथा पथ-प्रदर्शन की क्षमता अवश्य होनी चाहिए

छात्रों की टोलियाँ जब नये स्थानों और वस्तुओं के निरीक्षण के लिए जायें, तब भूगोल-शिक्षक उनसे सद्व्यवहार करें जिससे छात्रों में उसके प्रति श्रद्धा और सद्भावना उत्पन्न हो। इस साधन के अनुशासन ठीक रहेगा। भौगोलिक पर्यटनों के समय शिक्षक छात्रों का नायक होता है, अतएव उनमें पथ-प्रदर्शन करने की योग्यता अथवा नेतृत्व करने के गुण होने चाहिए।

(8) भूगोल-शिक्षक को सफल भौगोलिक कहानी रचने तथा कहने वाला होना चाहिए

क्योंकि निम्न कक्षाओं में भूगोल-शिक्षक का साधन सरल भाषा में कही गयी भौगोलिक महत्त्व की कहानियाँ हैं। शिक्षक को छात्रों में कहानियाँ सुनने की जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिए और भौगोलिक महत्त्व की अच्छी कहानियाँ कहकर उन्हें सन्तुष्ट रखना चाहिए। कहानी छोटी हो तथा ऐसी भाषा में कही जाय जिसे छात्र ठीक प्रकार समझ सकें। कहानी छात्रों की रुचि के अनुकूल और सरस हो। अध्यापक को कहानी में स्वयं रुचि हो तथा उसका कथानक वास्तविक हो। कहानी के विभिन्न भाग एक-दूसरे से सम्बन्धित हों तथा कहानी एक ही अवन्ति में समाप्त हो जाय। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसमें भौगोलिक महत्त्व हो तथा अध्यापक के कहने की शैली में विभिन्नता तथा सजीवता हो।

(9) शिक्षक को मॉडल, मानचित्र, नक्शा तथा भौगोलिक चित्र बनाने में दक्ष होना चाहिए

क्योंकि ये सभी सहायक समितियाँ भूगोल-शिक्षक के आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण अंग हैं। शिक्षक को स्वयं उन कलाओं का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे छात्रों को ठीक प्र

समझा सके। इनके बनाने के अतिरिक्त कक्षा में शिक्षक इनका सफलतापूर्वक उपयोग कर सके, इस बात की भी बहुत आवश्यकता है। कक्षा में पढ़ाते समय आवश्यकतानुसार मानचित्र, रेखाचित्र कुशलतापूर्वक अध्यापक को बना लेने चाहिए। कक्षा में पढ़ाते समय उचित प्रयोग तथा समयानुसार बनाये गये मानचित्र, रेखाचित्र अधिक प्रभावोत्पादक होते हैं। मॉडल पढ़ाने से बनाकर उपस्थित किये जा सकते हैं, परन्तु अन्य सामग्री पाठ के विकास के साथ-साथ बनानी चाहिए। शिक्षक को इस क्षेत्र में बहुत कुशल होना चाहिए, जिससे इस सामग्री के निर्माण तथा उपयोग से छात्रों की रुचि जाग्रत हो और पाठ स्पष्टतापूर्वक समझ में आ जाए। अध्यापक को इन सब वस्तुओं के सफलतापूर्वक बनाने के लिए चित्रकारी का अभ्यास होना चाहिए, जिससे वह अपने पाठों के लिए सहायक सामग्री के विषय में आत्मनिर्भर हो सके।

(10) भूगोल-शिक्षक में भौगोलिक वस्तुओं के संग्रह की रुचि होनी चाहिए

क्योंकि इनकी सहायता से शिक्षक को अपने विषय के शिक्षण में सहायता मिलती है। समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं आदि को जिसमें भौगोलिक बातों का वर्णन है तथा जिनसे नवीन ज्ञान प्राप्त होता है, एकत्र करना चाहिए। भौगोलिक लेख तथा चित्र काटकर एकत्र करने की योजना बना लेनी चाहिए। सरलता से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का संग्रह कर लेना चाहिए। धातुएँ, मिट्टी, बीज तथा अन्य प्रकार की भौगोलिक वस्तुओं का संग्रह करने की प्रवृत्ति शिक्षक में होनी चाहिए जिससे इनके सहारे अन्य देशों की जलवायु तथा पैदावार आदि पर प्रकाश डाला जा सकता है। प्रत्येक स्कूल में अच्छा भौगोलिक संग्रहालय हो, जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोग दें।

(11) भौगोलिक कारणों तथा भौगोलिक नियन्त्रण का स्पष्टीकरण करना

शिक्षक का विशेष गुण होना चाहिए। भूगोल के पाठ पढ़ाते समय भौगोलिक नियन्त्रण तथा कारणों का स्पष्टीकरण अवश्य करें। प्राकृतिक परिस्थितियाँ, किसी देश के निवासियों का जीवन, रहन-सहन, भोजन, वेश-भूषा आदि पर क्या प्रभाव डालती हैं—ये सब बातें छात्रों को ठीक प्रकार बतानी चाहिए। **बंगाल में चावल, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में गेहूँ पैदा होता है, क्यों ? ऐसे भौगोलिक कारण स्पष्ट करना तथा उच्च कक्षाओं में कार्य और कारण के मध्य सम्बन्ध समझना अध्यापक का कर्त्तव्य है। शिक्षक को तर्कशील होना चाहिए।**[1]

(12) भूगोल-शिक्षक में देशाटन के लिए प्रेम तथा रुचि होनी चाहिए

क्योंकि भौगोलिक ज्ञान का अधिकांश भाग देशाटन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। भूगोल-शिक्षण में देशाटन का अत्यन्त महत्त्व है क्योंकि छात्र निरीक्षण द्वारा प्रकृति के सम्पर्क में आकर अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। सुने हुए ज्ञान से देखा हुआ ज्ञान अधिक अच्छा और उन्नतिशील होता है। अतः भूगोल के अध्यापक को वस्तुओं की विशेषता बताने के लिए तथा आयात-निर्यात के साधन, प्रसिद्ध स्थान आदि का ज्ञान होना चाहिए और इसके लिए उसे देशाटन-प्रेमी होना चाहिए। यदि शिक्षक ने रेगिस्तान प्रदेश का भ्रमण कर लिया है, तो वह रेगिस्तानी प्रदेशों का वर्णन करते समय अपने वास्तविक ज्ञान के आधार पर उसे भली-भाँति समझ सकेगा तथा छात्रों के समक्ष सफलतापूर्वक जीता-जागता चित्र सम्मुख खींचकर विषय को सहज ही वास्तविक तथा सरस बना सकता है। देशाटन से सदैव ज्ञान-वृद्धि होती है।

(13) भूगोल-शिक्षक को चाहिए कि वह भूगोल-शिक्षण के मुख्य-मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति का सदैव ध्यान रखे

प्रत्येक स्तर पर विषय के शिक्षण-उद्देश्यों की पूर्ति का लक्ष्य अपने समक्ष रखे और समय समय अपने शिक्षण का स्वयं मूल्यांकन करता रहे और देखे कि उसे विषय के उद्देश्यों को पूरा करने में कहाँ तक सफलता मिलती है। इस कसौटी द्वारा उसकी सफलता तथा योग्यता का निर्धारण किया जा सकता है।

(14) भूगोल-शिक्षक छात्र में अपने विषय के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने की योग्यता रखे

क्योंकि इसी साधन द्वारा अध्ययन के लिए स्थायी रुचि और लगन पैदा होती है। इसमें सन्देह नहीं कि भूगोल का क्षेत्र व्यापक है। विगत वर्षों में इसका शिक्षण इतना अमनोवैज्ञानिक रहा है कि छात्रों के हृदय में इसके प्रति अश्रद्धा तथा भय उत्पन्न हो गया है। अध्यापक अपना शिक्षण इतना आकर्षणपूर्ण बनाये, जिससे छात्र उसके विषय की ओर अपने आप आकर्षित हों। शिक्षक छात्रों में रुचि उत्पन्न करें तथा सफल अध्यापक के उत्तरदायित्व को निबाहें।

(15) भूगोल-शिक्षक को आदर्शवादी तथा दार्शनिक दृष्टिकोण रखना चाहिए

मानव-समृद्धि तथा सुख बढ़ाने में भूगोल-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण योग होना चाहिए। अपने पाठों में सदैव उसे यह प्रयत्न करना चाहिए कि देश-विदेश के मनुष्यों के बीच सद्भावना जाग्रत हो तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का सृजन हो सके। 'एक विश्व का आदर्श' सदैव शिक्षक को अपने समक्ष रखे। शिक्षक अपना विषय मानव-समाज की पृष्ठभूमि बनाकर पढ़ाये, जिससे भ्रातृ-भावना रखने वाले नागरिकों के निर्माण, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना तथा शान्ति स्थापित करने में सफल हो सके।

आज के युग में जब संसार विश्व-युद्ध की विभीषिका में कूदने के लिए उद्यत है, अणु तथा नाभिकीय हथियारों का ढेर एकत्रित करने में सबल राष्ट्र संलग्न है, भूगोल का शान्ति-दूत के रूप में अत्यधिक महत्त्व है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, सहयोग, भाईचारे की भावना का उत्पन्न करना भूगोल-शिक्षक का पुनीत कार्य है। सामाजिक विषयों तथा विशेष रूप से भूगोल-शिक्षकों को यह स्वर्णिम अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए और इस पवित्र कार्य का उत्तरदायित्व निर्वाह करना चाहिए।

प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. भूगोल विषय की विशेषता के अनुसार भूगोल-शिक्षक में किन योग्यताओं का होना आवश्यक है ? वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भूगोल-शिक्षण में बाल मनोविकास का ज्ञान शिक्षक को जानना क्यों आवश्यक है ?
2. शिक्षक को मॉडल, मानचित्र, नक्शा तथा भौगोलिक चित्र बनाने में दक्ष क्यों होना चाहिए ?
3. भूगोल-शिक्षक को आदर्शवादी तथा दार्शनिक दृष्टिकोण रखना चाहिए। इस पर टिप्पणी लिखिये।